प्रकाशन तिथि : 1 जुलाई 2025, वर्ष 36, अंक 1
कवर सहित पृष्ठ 28, मूल्य रु. 5/-, विदिशा (म.प्र.)

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड R.N.I. No. 50334/90
डाक पंजीयन क्र.- without pre payment
म.प्र./विदिशा 02/2024 से 2026

CELEBRATION 36 YEARS 1990-2025 OF EXCELLENCE

सचित्र प्रेरक ज्ञान वैराग्यमय मासिक पत्रिका —— जुलाई 2025

ज्ञानधारा

ज्ञायक की है ज्ञानधारा

महावीर जन्म सम्वत् 2624, वीर निर्वाण सम्वत् 2551

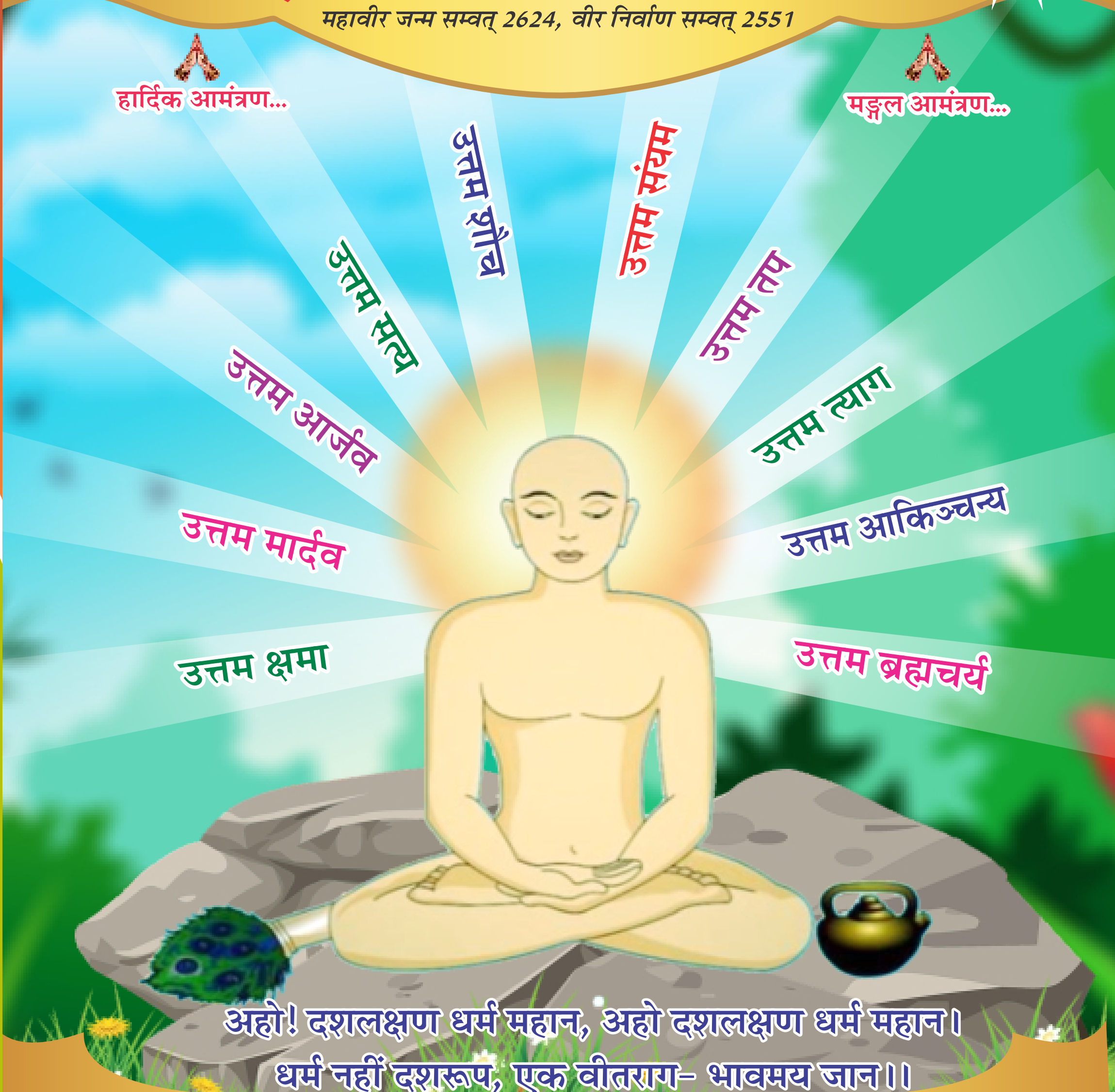

अहो! दशलक्षण धर्म महान, अहो दशलक्षण धर्म महान।
धर्म नहीं दशरूप, एक वीतराग- भावमय जान।।

सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी में **श्री दशलक्षण महापर्व** के अवसर पर

श्री दशलक्षण-रत्नत्रय विधान एवं आध्यात्मिक साधना शिविर

दिनांक 28 अगस्त से 6 सितम्बर 2025

ADV

प्रकाशन तिथि :1 जुलाई 2025, वर्ष 36, अंक 1
कवर सहित कुल पृष्ठ 28, मूल्य रु. 5/-

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

अरे...! देह के परिवर्तन का अटल नियम है
देहातीत बनों मामाजी तुम्हें नमन है.....!

आत्मा अजर
अमर है।

शरीर विनाशीक
नश्वर है।

जन्म तिथि
14.02.1935

देह परिवर्तन तिथि
06.05.2025

वढ्वाण निवासी, वर्तमान में मुंबई प्रवासी

श्री अनंतराय अमूलखभाई सेठ

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के अनन्य भक्त, अध्यात्म प्रेमी, तत्त्वरूचिवंत, सरल शांत, मृदु स्वभावी, सेठ एवं शाह परिवार तथा सम्पूर्ण मुमुक्ष समाज के शिरमौर **श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई** का दिनांक 6 मई 2025 को 90 वर्ष की उम्र में समता एवं शांत परिणामों पूर्वक देह परिवर्तन हो गया।

आप अत्यन्त सरल, शांत एवं भद्रपारिणामी, स्वाध्याय प्रेमी थे। पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान को सम्पूर्ण देश-विदेश में नगर-नगर, घर-घर और जन-जन में प्रसारित करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान है इसी के साथ-साथ सुवर्णपुरी सोनगढ़, सम्मेदशिखरजी,श्रवणबेलगोल, पोन्नूर, कुंदाद्री, सोनागिरजी आदि अनेक तीर्थों की सुरक्षा एवं प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के प्रति आपकी समर्पणता एवं सहयोग अनुकरणीय है।

ज्ञातव्य है कि आप श्री नेमिष एस. शाह, श्रीमती रेखा एन. शाह एवं श्री केतन एस. शाह श्रीमती कविता के. शाह के पूज्य मामाश्री थे।

'ज्ञानधारा' परिवार अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए भावना भाता है कि आप अपनी पवित्र धार्मिक भावनानुसार आत्माश्रय पूर्वक शीघ्र शाश्वत् सुख शांति एवं परमपद को प्राप्त हों..... ।

श्रद्धानवत् :

पति : श्रीमति कनकबेन अनंतराय सेठ
भाई : स्व. श्रीमती शारदाबेन-शांतिलाल शाह
स्व. श्री सवाईलाल अमूलखभाई सेठ
श्रीमति नीताबेन मधुभाई दोशी

पुत्र-पुत्रवधु : अनुजभाई-पारूलबेन
हितेनभाई-दीपाबेन
पुत्री-दामाद : स्मृतिबेन-प्रतीकभाई
दामाद : स्व. श्री चंपकलाल मगनलाल वोरा

दादाजी : आगमभाई-द्रष्टिबेन, तन्मयभाई-विधिबेन, आयुशीबेन-शालिनभाई
परदादाजी : आरा, नानाजी : कुशभाई-प्रतीतिबेन
ससुराल पक्ष : स्व. श्रीमती मीनाबेन-महेन्द्रभाई सपाणी
श्रीमती चंद्राबेन-महेन्द्रभाई गांधी, स्व. श्रीमती तरूबेन शिरीषभाई खारा

Adv.

आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना के स्वर

ज्ञानधारा

हिन्दी मासिक

संस्थापक :

'जैनरत्न' वाणीभूषण पं. ज्ञानचन्द जैन

मानद सम्पादक :

डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री, एम.ए.

प्रबन्धक :

श्रीमती संगीता जैन, विदिशा

अनुयोग धारा

प्रथमानुयोग धारा –	वीर-शासन जयन्ती	9
करणानुयोग धारा –	धन्य है क्षायिक सम्यक्त्वी जीव	11
चरणानुयोगधारा –	प्रत्येक पदार्थ प्रति समय	13
द्रव्यानुयोग धारा –	भगवान आत्मा अतीन्द्रिय है	15

अन्य धाराएँ

काव्य धारा –	रक्षाबन्धन पर्व	4
प्रवचन धारा –	जिनप्रतिमा जिन सारखी	5
परमागम धारा –	रक्षा बन्धन	8
समाचार धारा –		17
प्रभावना धारा –	सच्ची लगन लगी हो तो...	23
मंथन धारा –	जितना पुण्योदय होगा....	25

लेखक के विचारों से सम्पादक सहमत हो यह आवश्यक नहीं।

ज्ञानधारा के संरक्षक पद हेतु

परम शिरोमणि संरक्षक	–	2,00,000/-
शिरोमणि संरक्षक	–	1,00,000/-
परम संरक्षक	–	51,000/-
संरक्षक	–	25,000/-
सहयोगी	–	11,000/-

ज्ञानधारा में विज्ञापन देने हेतु

मुख्य कवर पृष्ठ प्रथम या अंतिम (रंगीन)	7000/- रु.
कवर पृष्ठ अंदर दो या तीन (रंगीन)	8000/- रु.
एक सम्पूर्ण पृष्ठ अन्दर (ब्लैक)	5000/- रु.
आधा पृष्ठ अन्दर (ब्लैक)	3000/- रु.

कार्यालय

'ज्ञानधारा', पोस्ट बॉक्स नं. 16, मुख्य डाकघर, मेन रोड, विदिशा - 464001 (म.प्र.)

सम्पादकीय : 'ज्ञानधारा', फ्लेट नं. 10, सिटी सेन्टर, हास्पिटल रोड, विदिशा - 464001 (म.प्र.)

सम्पादकीय मोबाईल, व्हाट्सएप नं. : 0-94251-48507

E-mail : gyandhara.vds@gmail.com

सा. सदस्य : 500/- रु. (पाँच वर्ष) वार्षिक सदस्य : 50/- रुपये सदस्य : 1000/- रु. (दस वर्ष)

निवेदन : आप अपने नगर के सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में 'आचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट विदिशा' के सेविंग एकाउण्ट नं. 13750 12886, IFS Code : CBIN0281225 या बैंक ऑफ महाराष्ट्र, विदिशा एकाउण्ट नं. 20159615108 IFS Code : MAHB0001470 में ऑनलाईन द्वारा नगदी या चैक द्वारा सहयोग राशि जमा कर हमें सूचित करें एवं रसीद प्राप्त कर लें।

....धन्यवाद

सर्व जनों में आनंद छाया:

रक्षाबन्धन पर्व मनाया

(तर्ज : रोम-रोम पुलकित हो जाए...)

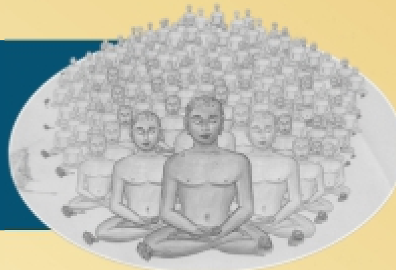

जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार, गुरुवर धर्म के रक्षणहार।

दुष्ट बली जब कुमति उपाई, संघ घेर नरमेघ रचाई।
मच गया गजपुर हाहाकार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।। 1।। टेक।।

संघ उपसर्ग की खबर सु-पाकर, पुष्पदंत मुनि अति घबराकर।
आकर तुमसे करी पुकार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।।2।।टेक।।

गुरु तुम वीतरागता धारी, विक्रिया ऋद्धि प्रकट भई भारी।
उमड़ा वात्सल्य सुखकार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।।3।।टेक।।

बौने द्विज का वेष बनाया, चमत्कार तप का दिखलाया।
पड़ गया बलि नृप चरण मँझार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।।4।।टेक।।

मुनियों का उपसर्ग मिटाया, सबको दया धर्म सिखलाया।
हुआ जिनधर्म का जय जयकार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।।5।।टेक।।

क्षमा भाव धरि बलि को छोड़ा, उसने हिंसा से मुख मोड़ा।
धारा जैनधर्म सुखकार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।। 6।। टेक।।

सर्वजनों में आनन्द छाया, रक्षाबन्धन पर्व मनाया।
हर्षित होय दिया आहार, जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार।। 7।। टेक।।

जय-जय मुनिवर विष्णुकुमार, गुरुवर धर्म के रक्षणहार।।

रचयिता – ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्'

जिनप्रतिमा जिनसारखी

पद्मनन्दि पञ्चविंशति पर जिनेन्द्र–स्तवन प्रवचन

गाथा–11

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर बज्झइ पट्टो दिणम्मि अज्जयणे।
सहलत्तणेण मज्झे सव्वदिणाणं पि सेसाणं।।11।।
दृष्टे त्वयि जिनवर बध्यते पट्टो दिनेऽद्यतने।
सफलत्थेन मध्ये सर्वदिनानामपि शेषाणाम्।।
इतनें दिनों में आज का दिन, हे प्रभो! तव दर्श से।
हो सफलता का पट्ट–बन्धन योग्य है सब दिनों में।।

अर्थात् **हे प्रभो! हे जिनवर!** आपके दर्शनों के होने के कारण समस्त दिनों में आज का दिन उत्तम तथा सफल है; ऐसा जानकर पट्ट–बन्धन किया।

भावार्थ–समस्त दिनों में मेरा आज का दिन उत्तम तथा सफल है, ऐसा मैं समझता हूँ, क्योंकि आज मुझे आपका दर्शन मिला है।

गाथा 11 पर प्रवचन

हे जिनवर! मुझे आपके दर्शन हुए, मैंने ज्ञानानन्द चिदानन्द स्वभाव के भानपूर्वक आपको देखा और आपकी प्रतिमा को देखा; इसलिए मेरे लिए वर्तमान काल उत्तम है।

मैं त्रिकाली शक्ति का पिण्ड हूँ और अपनी वर्तमान पर्याय की त्रिकाली स्वभाव के साथ सन्धि, अर्थात् सन्मुखता करने से अमरत्व पद प्राप्त हुआ है और (मेरे) जन्म–मरण का अन्त हुआ है। मैंने अनादि काल तो व्यर्थ ही गँवाया है परन्तु आज का दिन और आज का स्वकाल धन्य है। अभी तक मेरे ज्ञान की पर्याय, राग और निमित्त को निज मानकर उनमें अटकती थी, वह दीवाली नहीं, किन्तु होली थी। अब, स्वभाव के साथ मित्रता, अर्थात् स्वसन्मुखता करके प्रगट हुआ स्वकाल (पर्याय) दीवाली है, सफल है।

हे नाथ! आप सर्वज्ञ, परिपूर्ण गुण की अस्तिवाले हैं; इस प्रकार मैंने अपनी अल्पज्ञ पर्याय में पूर्ण का भरोसा किया है, इसलिए आज का दिन सफल है–ऐसा जानकर स्वयं ने अपने लिए अमर पद लिया है। भजन में भी आता है कि '**अब हम अमर भये न मरेंगे**' – तात्पर्य यह है कि अभी तक मिथ्यात्व के कारण होनेवाले जन्म–मरण का भी अभाव होता है।

देखो, धर्मात्मा जीव को जिनप्रतिमा के प्रति भी बहुमान का भाव आता है। वह '**जिनप्रतिमा जिनसारखी**'–ऐसा मानता है।

तत्त्वज्ञान के अभ्यास से जिसकी पात्रता पक गयी है, उसकी भवस्थिति पक गयी है; उसे जिन प्रतिमा भी भगवान जैसी भासित होती है। उसे आत्मभान हुआ है; अत: (भूमिकानुसार) शुभभाव आता है। जैसे, दर्पण में मनुष्य जैसा हो, वैसा ही दिखलायी पड़ता है; इसी प्रकार

भगवान वीतराग थे, वस्त्रादि रहित और अठारह दोषरहित अविकारी थे, वैसा ही शुद्ध प्रतिबिम्ब हो तो उसे सच्चा जिनबिम्ब कहा जाता है। उसी प्रकार की उसकी स्थापना होती है।

हे नाथ! आपके प्रतिबिम्ब के दर्शन, पूर्ण ज्ञान के भानसहित किये है, इसलिए हमें अमरपद प्राप्त हुआ है। हमने आपके राज्यरत्न का पद ले लिया है।

मैंने भावपूर्वक आपके दर्शन किये हैं, अत: आज का दिन अमर पद का है। यहाँ तो वर्तमान पर्याय की त्रिकाली द्रव्य के साथ सन्धि की बात है, अन्य कोई बात नहीं है।

समस्त दिनों में मेरा आज का दिन उत्तम तथा सफल है ऐसा मैं समझता हूँ क्योंकि आज मुझे आपके दर्शन हुए हैं।

गाथा–12

दिट्ठे तुमम्मि जिणवर भवणमिदं तुज्झ महमहग्घतरं।
सव्वाणं पि सिरीणं संकेयघरेव पडिहाइ ।।12।।
दृष्टे त्वयि जिनवर भवनमिदं तव महार्घ्यतरम्।
सर्वासामपि श्रीणां संकेतगृहमिव प्रतिभाति।।
जिनवर तुम्हारे दर्श से, बहुमूल्ययुत जिनघर सदा।
लगता मुझे संकेत घर, सब संपदाओं से भरा।।

अर्थात् हे प्रभो! हे जिनेश्वर! आपके देखने से यह जो बहुमूल्य आपका मन्दिर है, वह मेरे लिए समस्त प्रकार की लक्ष्मी के संकेत घर के समान है – ऐसा मुझे मालूम पड़ता है।

भावार्थ–हे भगवन्! आपके दर्शन से यह आपका स्थान मुझे ऐसा मालूम पड़ता है, मानों समस्त प्रकार की लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए मुझे संकेत घर है।

गाथा 12 पर प्रवचन

हे नाथ! हे प्रभु! आपको देखने से जो आपका अमूल्य मन्दिर है, वह समस्त प्रकार की लक्ष्मी के संकेत समान हैं।

अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, भगवान की वाणी, जिन प्रतिमा, जिन चैत्यालय और जिनधर्म, इन सबको देव कहते हैं। आपका मन्दिर बहुत मूल्यवान है। जहाँ आप वसते हो, वह मन्दिर मेरे मन लक्ष्मी के संकेत का घर है। जिस प्रकार भँवरे में करोड़ों रत्न पड़े हों; उसी प्रकार **हे भगवान!** मेरे शरीर में अनन्त गुणों का पिण्ड आत्मा पड़ा है। वही ज्ञान और आनन्द का भण्डार है –ऐसा आपके दर्शन से मुझे ज्ञात हुआ है। **हे नाथ!** आपका मन्दिर देखने से मुझे भाषित हुआ है कि मेरे आत्ममन्दिर में आनन्द की खान है।

यहाँ यह कहा है कि मन्दिर ऊँचे होते हैं। श्रावक को ऐसा शुभराग आता है। जैसे, पुत्र के लिए अच्छा मकान बनाते हैं; इसी प्रकार जिनमन्दिर, चैतन्य की अनुपम ऋद्धि देखकर **अहो!** यह अनुपम लक्ष्मी का संकेत घर है। यहाँ निमित्त अपेक्षा बात की है। मैं पर्याय को अन्तरसन्मुख करके देखता हूँ तो आत्मा में केवलज्ञान लक्ष्मी को प्रकट करे–ऐसा मेरा मन्दिर है। वस्तुत: गृह चैत्य तो यह चैतन्य है। उसकी दृष्टिपूर्वक शुभराग आने पर भगवान के मन्दिर बनवाने का विकल्प आता है। वह जिनमन्दिर यह संकेत करता है कि तेरा चैतन्य मन्दिर केवलज्ञान

के संकेतवाला है। चैतन्य मन्दिर, केवलज्ञान से भरा है। इस प्रकार (यह जिनमन्दिर निमित्तरूप से) अन्तर्मन्दिर के दर्शन कराता है।

अभिप्राय यह है कि **हे भगवान!** आपके दर्शन से आपका स्थान मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि मानों वह समस्त लक्ष्मी का संकेत घर है। मन्दिर में प्रवेश करते ही मानो मैं केवलज्ञान में प्रवेश करता हूँ–ऐसा लगता है। अपने आत्मा का भान होने पर मन्दिर के प्रति निक्षेप आता है कि यह केवलज्ञान का संकेत घर है। जिनमन्दिर देखकर ज्ञानी यह विचार करता है कि मानो जिनमन्दिर मुझे चैतन्यलक्ष्मी का ईशारा कर रहा है। जिससे मैं मेरी पूर्ण शक्ति के अवलम्बन से पूर्ण दशा प्रगट करूँगा। **हे प्रभु!** आपके दर्शन का यह फल है – ऐसा बताते हैं।

भगवान की प्रतिमा और मन्दिर किसने देखा, कहा जाए? देखो! प्रतिमा तो पर है और मैं तो चैतन्यमूर्ति हूँ। मेरा स्वभाव रागरहित है, उसे जानने से मन्दिर आदि ज्ञात हो जाते हैं। उस मन्दिर को देखकर ऐसा लगता है कि **हे जिनेश्वर!** आपकी प्रतिमा के दर्शन होने से आपका अमूल्य मन्दिर, लक्ष्मी के संकेत समान है। मन्दिर में केवलज्ञान की लक्ष्मी का भण्डार है – ऐसा प्रतिमा बतलाती है और मेरे आत्मा में आनन्द व केवलज्ञान का भण्डार है–ऐसा बतलाती है।

चैत्यालय और प्रतिमा निमित्त किसे? मैं स्वभाव से स्व–परप्रकाशक ज्ञानवाला हूँ; मैं राग और निमित्त से नहीं जानता, किन्तु भिन्न ज्ञाता रहकर ज्ञानस्वभाव से जानता हूँ। अपने स्वभाव को जानने से पर को जान लेता हूँ। शुभराग का लक्ष्य पर के प्रति जाता है। जब तक पूर्ण वीतरागदशा न हो, तब तक वीतरागी धाम इत्यादि के प्रति राग आये बिना नहीं रहता, तथापि ज्ञानी उसे बन्ध का कारण समझता है।

मैं अबन्ध चैतन्यस्वभावी हूँ ऐसे भानपूर्वक ज्ञानी, भगवान के दर्शन करता है। वहाँ वस्तुतः वह भगवान को नहीं देखता, अपितु स्व–परप्रकाशक आत्मा को देखता है। पर प्रकाशक ज्ञान में जिनदेव ज्ञात हो जाते हैं। शुद्ध चैतन्य स्वभाव की निश्चयभक्ति है, तब अवशेष रहे राग को व्यवहारभक्ति कहते हैं। जो स्व – परप्रकाशक ज्ञानपर्याय अल्पज्ञरूप से प्रगट हुई है, उससे ज्ञात होता है कि स्वभाव में केवलज्ञान शक्तिरूप से विद्यमान है और ऐसा भान होने से कहता है कि मेरा अन्तरात्मा केवलज्ञान लक्ष्मी का भण्डार है और तब बाह्य मन्दिर पर लक्ष्मी के भण्डार का उपचार करता है।■ (क्रमशः)

साभार : पद्मनन्दि पञ्चविंशति प्रवचन गाथा–11–12
प्रवचनकार : पूज्य श्री कानजी स्वामी
सम्पादक : पं. देवेन्द्र कुमार जैन, बिजौलिया

ज्ञाता बन जा....!

शरीर शरीर का कार्य करता है, आत्मा आत्मा का कार्य करता है। दोनों भिन्न–भिन्न स्वतंत्र है, उनमें यह शरीरादि मेरे ऐसा मानकर सुख–दुःख न कर,ज्ञाता बन जा। देह के लिये अनंत भव व्यतीत हुए; अब, संत कहते हैं कि अपने आत्मा के लिये यह जीवन अर्पण कर।

–बहिनश्री के वचनामृत : 52

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा दिनांक 9 अगस्त 2025 को श्री रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर विशेष

कैसे मनायें?

रक्षा बन्धन

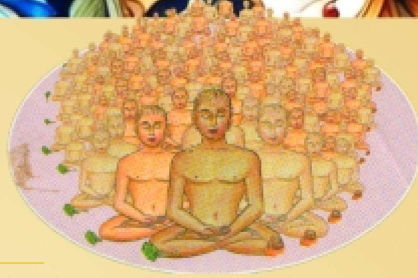

आगामी 9 अगस्त 2025 को रक्षाबन्धन पर्व आने वाला है और इस दिन को पूरे देश में भाई-बहन के पर्व के रूप में जाना जाता है, परन्तु आपको यह भी मालूम होना चाहिये कि जैन शासन के अनुसार सैकड़ों वर्ष पूर्व हस्तिनापुर नगरी में मुनि विष्णुकुमारजी के द्वारा आचार्य अकम्पन आदि सातसौ मुनिराजों की रक्षा करने के कारण इस दिन को रक्षाबन्धन पर्व या वात्सल्य पर्व के नाम से जाना जाता है। लेकिन आश्चर्य है अधिकांश जैन समाज के लोग इस दिन को भाई-बहन, राखी-गिफ्ट के नाम तक सीमित करके मुनियों की इस हृदय विदारक घटना को भूल जाते हैं। इस दिन को हमें विशेष भक्ति-पूजन-आत्म आराधनापूर्वक मनाना चाहिये।

कैसे मनायें यह पर्व -

1. रक्षाबन्धन पर्व के सात दिन पूर्व ही मुनियों पर उपसर्ग की घटना को याद करते हुये सात दिन के लिये अपनी प्रिय वस्तु का त्याग करें।
2. प्रतिदिन सोने के पूर्व सात सौ मुनिराजों को वन्दन अवश्य करें।
3. प्रतिदिन मुनिराजों की विशेष भक्ति करें और त्रिकालवर्ती साधुओं की मंगल आराधना की भावना भायें।
4. प्रतिदिन मुनिराजों के आहार समय के बाद अर्थात् लगभग 11 बजे भोजन करें।
5. पर्व वाले दिन जिनमन्दिर में मुनिराजों की विशेष पूजन करें।
6. सभी साधर्मियों को वात्सल्यपूर्वक रक्षासूत्र बांधें।
7. यदि पाठशाला चलती हो तो वहाँ अथवा आसपास के बच्चों को मिष्ठान्न वितरण करें।
8. भाई-बहनें राखी बन्धन के समय जीवन के उत्थान के लिये एक प्रतिज्ञा लें। जैसे-अष्टमी और चतुर्दशी को रात्रि में अन्न-जल का त्याग, शास्त्र-स्वाध्याय आदि।
9. रात्रि में भी जिनमन्दिर जायें और प्रवचन आदि का लाभ लें अन्यथा स्वयं स्वाध्याय-भक्ति करें।

With Best Compliments From

Veera®

Fragrances Pvt. Ltd.

AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY

Ajit Parshad Jain
Chairman

श्री दिव्य देशना ट्रस्ट, नौएडा

Vaibhav Jain
Director

MANUFACTURES & DEALS IN :
INDUSTRIAL FRAGRANCES
AROMATIC CHEMICALS
ESSENTIAL OILS

J-16, Sector-63, Noida - 201307 (India)
0120 4149606, 74282 54727
v.jain@veerafragrances.com
marketing@veerafragrances.com
www.veerafragrances.com

दि. 11 जुलाई 2025 को

श्री वीर-शासन जयन्ती-पर्व

शासननायक तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी
राजगृही नगर (विपुलाचल पर्वत)

जैन-शास्त्रों के अनुसार नए वर्ष का प्रारम्भ श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को होता है। युग का प्रारम्भ अथवा उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी-रूप कालों का आरम्भ इसी तिथि से हुआ है। युग की समाप्ति आषाढ़ पूर्णिमा को होती है, पश्चात् श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को अभिजित नक्षत्र, बालकरण और रौद्रमुहूर्त में युग का आरम्भ हुआ करता है। '**तिलोयपण्णत्ती**' में कहा है-

सावण बहुले पाडिब रुद्दमुहुत्ते सुहोदये रविणो।
अभिजस्स पढमजोए जुगस्स आदी इमस्स पुढं।।

भगवान् महावीर की दिव्य-ध्वनि सर्वप्रथम श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को ही खिरी थी। ऋषभादि पार्श्वपर्यन्त तेईस तीर्थंकरों में से प्रत्येक ने केवलज्ञान की प्राप्ति के उपरान्त अपने-अपने धर्मचक्र का प्रवर्त्तन करके अपनी धर्मव्यवस्था, धर्मशासन या जिनशासन की स्थापना की थी, और सच्चे-सुख के साधन मोक्षमार्ग का पुन: पुन: उद्घाटन किया था। एक तीर्थंकर द्वारा धर्मचक्र प्रवर्तन से लेकर अगले तीर्थंकर के धर्मचक्र प्रवर्तन-पर्यन्त उक्त पूर्ववर्ती तीर्थंकर का ही शासन चला और लोकप्रसिद्ध रहा। इसप्रकार भगवान् पार्श्वनाथ (ई.पू. 899-777) का धर्मशासन ईसापूर्व 849 से लेकर 559 तक चला, जिसके उपरान्त अन्तिम तीर्थंकर निर्ग्रन्थ ज्ञातृपुत्र वर्द्धमान महावीर का शासन प्रवर्तित हुआ।

तीस वर्ष के बाद मंगसिर कृष्ण दशमी के दिन भगवान् महावीर वन को चले गए, और उन्होंने बारह वर्ष तक अनशनादिक बारह-प्रकार का तप किया। तत्पश्चात् वे विहार करते हुए ऋजुकूला नदी के तट पर स्थित जृम्भिक गाँव के समीप पहुँचे। वहाँ वैशाख शक्ल दशमी के दिन दो दिन के उपवास का नियम कर वे सालवृक्ष के समीप स्थित शिलातल पर आतापन योग में आरूढ़ हुए। तब शुक्लध्यान को धारण करनेवाले वर्द्धमान जिनेन्द्र घातिया-कर्मों के समूह को नष्टकर केवलज्ञान को प्राप्त हुए। छियासठ दिन तक मौन- विहार करते हुए वे '**राजगृह**' नगर आए। नियमानुसार तो जहाँ तीर्थकरों को केवलज्ञान प्राप्त हुआ, वहाँ तत्काल बाद उनकी दिव्य-ध्वनि खिरने लगती है, पर भगवान् महावीर इसके अपवाद-स्वरूप हैं। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि उस समय तक उनका कोई गणधर नहीं था। राजगृह के वैभार पर्वत पर, जो कि उस नगरी के पश्चिम-दक्षिण कोण पर स्थित, आषाढ़ शुक्ल 15 के दिन महा तेजस्वी विप्रश्रेष्ठ इन्द्रभूति गौतम, अग्निभूति, वायुभूति तथा कोण्डिन्य आदि विद्वान् इन्द्र की प्रेरणा से श्री अरहन्तदेव के समवसरण में आए। वे सभी पण्डित अपने पाँच-पाँच सौ शिष्यों सहित थे, सभी ने वस्त्रादि का सम्बन्ध त्यागकर संयम धारण कर लिया। उसी समय राजा चेटक की पुत्री चन्दना ने भी आर्यिका व्रत स्वीकार किया।

राजा श्रेणिक भी अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ समवसरण में पहुँचा, और वहाँ सिंहासन पर विराजमान श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र को उसने नमस्कार किया। इसप्रकार भगवान् के मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविकारूप चतुर्विध-संघ का गठन हुआ। इसी कारण आषाढ़ की पूर्णिमा '**गुरु-पूर्णिमा**' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

वर्द्धमान प्रभु ने श्रावण मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को प्रात:काल के समय अभिजित् नक्षत्र में समस्त संशयों को छेदनेवाले, दुन्दुभि-शब्द के समान गम्भीर **दिव्य-ध्वनि** के द्वारा उपदेश दिया। उनकी सभा में देव, मनुष्य, स्त्री,

पशु-पक्षी सभी बिना किसी भेदभाव से बैठकर उनकी अमृतवाणी का पान करते थे।

अर्थात् अवसर्पिणी के चतुर्थकाल के अन्तिम-भाग में तेतीस वर्ष, आठ माह और पन्द्रह दिन शेष रहने पर वर्ष के श्रावण माह में कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के दिन, अभिजित नक्षत्र के उदित रहने पर धर्मतीर्थ की उत्पत्ति हुई।

आचार्य समन्तभद्र ने **'रत्नकरण्ड-श्रावकाचार'** में कहा है-

अनात्मार्थं विना रागैः शास्ता शास्ति सतो हितम्।
ध्वनन् शिल्पिकर-स्पर्शान्मुरजः किमपेक्षते।।

अर्थ- शास्ता अर्थात् धर्मोपदेश करने वाले अरहन्त भगवान् अनात्मार्थ अर्थात् अपनी ख्याति, लाभ, पूजादिक-प्रयोजन के बिना तथा शिष्यों के प्रति रागभाव के बिना सज्जनों को हितरूप शिक्षा देते हैं, जैसे मृदंग किञ्चित् अपेक्षा नहीं करता है।

तात्पर्य यह कि संसारी-जन जितना कार्य करते हैं, उसमें उन्हें लोभ, प्रशंसा, यश आदि की अपेक्षा रहती है; किन्तु भगवान् अरहन्त प्रयोजन के बिना ही जगत् के जीवों को हितोपदेश देते हैं। जैसे मेघ प्रयोजन के बिना ही लोगों के पुण्योदय के निमित्त से विभिन्न स्थानों में गमन करता हुआ प्रचुर जल की वर्षा करता है, वैसे ही भगवान् आप्त भी लोगों के पुण्य के निमित्त से पुण्यदेशों में विहारकर धर्मामृत की वर्षा करते हैं; क्योंकि सत्पुरुषों की चेष्टा/कार्य परोपकार के लिए हुआ करती है। जैसे कल्पवृक्ष तथा आम्रादि वृक्ष परोपकार के लिए ही फलते हैं। पर्वत प्रचुर सुवर्णादि सम्पदा को इच्छा के बिना ही जगत् के लिए धारण करता है। समुद्र-रत्नों को तथा गाय दूध को दूसरे के लिए धारण करती है एवं दाता परोपकार के लिए धन को धारण करते हैं। संसार में जितने परोपकारी पदार्थ हैं, वे बिना इच्छा ही लोगों के पुण्य के प्रभाव से प्रकट होते हैं। इसीप्रकार भगवान आप्त ने इच्छा के बिना ही लोगों के परोपकार के लिए धर्मरूप हितोपदेश किया। इसीलिए आचार्य समन्तभद्र ने **'युक्त्यनुशासन'** में भगवान् के तीर्थ को **सर्वोदयतीर्थ** कहा है-

सर्वान्तवत्तद्-गुणमुख्य-कल्पं सर्वान्तशून्यं च मिथोऽनपेक्षम।
सर्वोऽऽपदामन्तकरं निरन्तं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव।।

अर्थात आपका तीर्थ-शासन सर्वान्तवान् है, और गौण तथा मुख्य की कल्पना को साथ में लिए हुए है। जो शासन वाक्य-धर्मों में पारस्परिक अपेक्षा का प्रतिपादन नहीं करता, सर्वधर्मों से शून्य है। अतः आपका ही यह शासन-तीर्थ सर्व दुःखों का अन्त करनेवाला है-यही निरन्तर (अन्तरहित) है, और यही सब प्राणियों के अभ्युदय का कारण तथा आत्मा के पूर्ण-अभ्युदय का साधक **सर्वोदयतीर्थ** है। भावार्थ यह है कि आपका शासन अनेकान्त के प्रभाव से सकल-दुर्नय अथवा सर्वथा एकान्तवादरूप मिथ्यादर्शन ही संसार में अनेक शारीरिक तथा मानसिक-दुःखरूप आपदाओं के कारण होते हैं, इसलिए इन दुर्नयरूप मिथ्यादर्शनों का अन्त करनेवाला होने से आपका शासन समस्त आपदाओं का अन्त करनेवाला है, अर्थात् जो लोग आपके शासनतीर्थ का आश्रय लेते हैं, उसे पूर्णतया अपनाते हैं, उनके मिथ्यादर्शन आदि दूर होकर समस्त दुःख मिट जाते हैं, और वे अपना पूर्ण-अभ्युदय, उत्कर्ष एवं विकास सिद्ध करने में समर्थ हो जाते हैं।

प्रतिवर्ष **'वीरशासन-जयन्ती'** मनाते समय भगवान् महावीर सर्वोदय-तीर्थ की भावना को हृदय में अंकित कर उनकी वाणी का घर-घर में प्रचार और प्रसार करने का सतत यत्न करना प्रत्येक सत्पुरुष का कर्त्तव्य है, क्योंकि भगवान् के इष्ट-शासन से यथेष्ट-द्वेष रखनेवाला मनुष्य भी यदि समदृष्टिवाला होकर युक्तिसंगत समाधान की दृष्टि से उनके इष्ट-साधन का अवलोकन और परीक्षण करता है, तो अवश्य ही उसका मानश्रृंग खण्डित हो जाता है। ■

(सन्मति संदेश अगस्त 2004), पृष्ठ क्र. 21-22

-प्रे. श्री हर्षदभाई शाह, देवलाली, मुम्बई

धन्य है......
क्षायिक सम्यक्त्वी जीव

क्षायिक सम्यग्दृष्टि आत्मा अपने कषाय भावों की अति मन्दता को पाकर परम वैराग्यभाव को प्राप्त हो जाता है और यह भावना भाता है कि कब यह आत्मा कर्मबन्धन के जाल से छूटकर स्वतन्त्र हो जावे। इस समय इसके अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उपशम हो गया है, जिससे इसकी श्रेणी जो अविरत सम्यग्दर्शन थी, वह बदलकर देशविरत नाम की पाँचवीं श्रेणी हो गई है और दर्शन प्रतिमा का प्रारम्भ हुआ है। इसके इस बात की विशेष चारित्र में उत्कण्ठा हो गयी है कि सम्यग्दर्शन के आठ अंगों का पालन हो। इसमें निर्भयता अपूर्व है, कोई कितना भी भय बतावे, त्रास देवे, आपत्तियाँ सामने खड़ी करें परन्तु इस ज्ञानी का सत्य श्रद्धान व सत्य ज्ञान व सत्य आचरण कभी अन्यथा नहीं हो सकता। यह इस लोक-परलोक का भय, वेदना, मरणभय, अरक्षा, अगुप्त व अकस्मात् भयों को रंचमात्र भी नहीं रखता है। इसने अपने आत्मा ही को स्वलोक, परलोक माना है, अपनी ज्ञानचेतना की वेदना को वेदना जाना है, अपनी सत्ता को अमिट व अपने ज्ञान सुखादि धन को अचौर्य समझा है। अपने को अमरण व अकस्मात से बिल्कुल दूर अनुभव किया है। वज्रवत् आत्मा को कोई विकारी नहीं कर सकता-ऐसी दृढ़ता से यह नि:शंकित अंग को पालता है कि बिना संकोच के अपने निश्चित मार्ग पर चला जाता है-इसे लोगों की प्रशंसा व निन्दा की परवाह नहीं है, यह अपने मन्तव्य में अटल है। इसे आत्मिक रस की ही भावना है, विषय सुख के पीछे आकुलित नहीं होता है। यह भले प्रकार अपने भावों में निश्चय किये हुए है कि इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला सुख अतृप्तिकारी, आकुलतामय, बन्धरूप व तृष्णाताप वर्द्धन करने वाला है, जब कि आत्मिकसुख स्वाधीन, शान्त, मोक्षकारक व तृप्तिदायक है। इसे किसी भी पदार्थ से घृणा नहीं है, वस्तु स्वभाव की दृष्टि ने इसे उन पदार्थों को भी साम्यदृष्टि से देखने की बुद्धि दे दी है, जिनको जगत के साधारण प्राणी अशुभ व घृणास्पद देखते हैं। न कोई चेतनपदार्थ व अचेतनपदार्थ इसकी बुद्धि में निन्दनीय है। यह विचिकित्सा भाव को हटाकर प्रेम व दया के रस में भीजा हुआ है। रोगी, दरिद्री, दुखी मानव इसका दयापात्र हो जाता है और यह यथाशक्ति उसकी सेवा करके उसका प्रेमभाजन बन जाता है। मूढ़ता का व्यवहार इसे बिल्कुल स्पर्श नहीं करता। जैन सिद्धान्त के भाव-रहस्य का ज्ञाता यह क्षायिकसम्यक्त्वी जीव, अमूढ़दृष्टि अंग में अटल रहता हुआ अपनी आत्मिक शुद्धता को बढ़ाता हुआ उपगुहन गुण को पाल रहा है। यह उन आत्माओं की निन्दा नहीं करता जो अज्ञान

व तीव्र कषाय की प्रेरणा से कुमार्गगामी हो जाते हैं। उन पर भी इसकी दया है, उन पर भी इसका साम्यभाव है। यह ज्ञानी जीव निरन्तर अपने को साम्यभाव में स्थिर रखने की चेष्टा करता है तथा अपने मित्रों को मिथ्यात्व की कीच से निकल कर सम्यक्त्व के स्वच्छ आँगन के मध्य सम्यग्ज्ञान के सुखद आसन पर बैठा देता है। इसका प्रेम व वात्सल्यभाव उन सर्व आत्माओं से अत्यन्त प्रकर्ष हैं, जो अन्तरात्मा है. जो परमात्मपद की उमंग में स्वात्मपथ के अनुयायी हैं–उनके दु:खों को अपना दु:ख मानता हुआ, यह ज्ञानी उनके कष्टों को मेटने का पूर्ण प्रयत्न करता है। उनको सुखी देखकर ही यह प्रसन्न होता है। उनकी आपत्तियों को टालने के लिए यह अपनी बलि करने को भी उद्यत रहता है। इसको आत्म-प्रभावना के साथ-साथ परमपवित्र जैनधर्म की प्रभावना का पूर्ण ध्यान है। यह ज्ञानी जीव इन आठों अंगों को व्यवहार में विशेष लाता हुआ दर्शनप्रतिमा के भाव को चरितार्थ कर रहा है।

इस समय यह सर्व रागादि, गुण स्थानादि अनात्मभावों के विकल्प-जालों को त्याग कर रत्नत्रयमयी आत्मा के निर्विकल्प भवन में पदार्पण करता है और यहाँ समता की शय्या पर विराजमान स्वानुभूतितिया के निकट बैठकर स्वात्मानुभवरूप प्रेम के आलाप में मस्त हो, अतीन्द्रिय सुख को भोगता हुआ परम सन्तोषी हो रहा है।

(क्रमश:)

साभार : आध्यात्मिक सोपान

ब्र० शीतलप्रसादजी, पृष्ठ 118 से 120

हे भव्य जीव .....

- अपने धन को ऐसे कार्यों में लगाना जिससे जिनधर्म की परिपाटी बहुत लंबे काल तक चलती रहे।
- **हे आत्मन्!** तेरा स्वभाव तो सकल लोकालोक को जाननेवाला केवलज्ञानरूप है।
- समस्त परिग्रह में आत्मबुद्धि का मूल, मिथ्यात्व नाम का परिग्रह ही है।
- पाँच पापों का अभाव होना ही चारित्र है।
- आगम की आज्ञा मानने में ही हित है।
- शास्त्र पढ़ाने के समान दूसरा दान नहीं।
- फल तो जैसी हमारी चेष्टा परिणाम आचरण होगा वैसा प्राप्त होगा।
- आजीविका का उपाय न्यायमार्ग से ही करना चाहिए।
- अभक्ष्य-भक्षण करने से ही लोगों की बुद्धि सत्यार्थ धर्म से रहित हो गई है।
- समाधिमरण समान इस जीव का उपकार करने वाला अन्य कोई नहीं है।
- अनादिकाल से ही इस संसारी जीव की पर्याय में ही आत्मबुद्धि हो रही है।

साभार : रत्नकरण्डक श्रावकाचार जी

प्रेषक : आई. एस. जैन, मुम्बई

यह मान्यता मिथ्या है कि पञ्च महाव्रत के विकल्प के आश्रय से चारित्र प्रगट होता है तथा मैं व्यवहारसम्यग्दर्शन, व्यवहारसम्यग्ज्ञान और व्यवहारसम्यक्चारित्र के परिणाम करूँ, तो उससे निश्चयसम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र प्रगट होते हैं -यह मान्यता भी मिथ्यात्व है।

समय-समय की स्वतन्त्रता और भेदज्ञान

यह प्रत्येक वस्तु के स्वतन्त्र स्वभाव की बात है। स्वभाव की स्वतन्त्रता को न समझे और यह माने कि 'निमित्त से कार्य होता है' तो वहाँ सम्यकश्रद्धा-ज्ञान नहीं है और सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान के बिना शास्त्र का पठन-पाठन सच्चा नहीं है, व्रत सच्चे नहीं हैं, त्याग सच्चा नहीं है। प्रत्येक वस्तु में समय-समय की पर्याय की स्वतन्त्रता है। प्रत्येक पदार्थ में उसी के कारण से अर्थात् समय-समय की उसकी पर्याय की योग्यता से कार्य होता है। पर्याय की योग्यता उपादानकारण है और उस समय, उस कार्य के लिए अनुकूलता का आरोप जिस पर आ सकता है - ऐसी योग्यतावाली दूसरी वस्तु को निमित्त कहा जाता है; किन्तु उस निमित्त के कारण वस्तु में कुछ परिवर्तन नहीं होता-ऐसी उपादान-निमित्त की भिन्नता की यथार्थ प्रतीति ही भेदज्ञान है।

आत्मा और जड़ सब की पर्याय स्वतन्त्र है। जीव को पढ़ने का विकल्प हुआ, इसलिए पुस्तक हाथ में आ गयी- ऐसी बात नहीं है अथवा पुस्तक आ गयी, इसलिए विकल्प उत्पन्न हुआ-ऐसा भी नहीं है। इसी प्रकार ज्ञान होना था, इसलिए पढ़ने का विकल्प उठा-ऐसा भी नहीं है और पढ़ने का विकल्प उठा, इसलिए ज्ञान हुआ - ऐसा भी नहीं है। ज्ञान, पुस्तक और विकल्प तीनों ने अपना-अपना कार्य किया है।

वीतरागी भेदविज्ञान यह बताता है कि **प्रत्येक पदार्थ, प्रति समय अपने स्वतन्त्र उपादान से ही कार्य करता है।** वस्तुस्वरूप ऐसा पराधीन नहीं है कि निमित्त आये तो उपादान का कार्य हो; उपादान का कार्य स्वतन्त्र अपनी ही सामर्थ्य से ही होता है।

सूर्य का उदय और छाया से धूप-दोनों की स्वतन्त्रता

जिस समय परमाणु की अवस्था में छाया से धूप होने की योग्यता होती है, उसी समय धूप होती है और उस समय सूर्य इत्यादि निमित्तरूप हैं। यह बात मिथ्या है कि सूर्य का उदय हुआ, इसलिए छाया से धूप हो गयी अथवा छाया में से धूप अवस्था होनी थी, इसलिए सूर्य इत्यादि को आना पड़ा-यह बात भी मिथ्या है। सूर्य का उदय हुआ-यह उसकी उस समय की योग्यता है और जो परमाणु छाया से धूप के रूप में हुए हैं-यह उनकी उस समय की वैसी ही योग्यता है।

केवलज्ञान और वज्रवृषभनाराचसंहनन की स्वतन्त्रता

जब केवलज्ञान होता है, तब वज्रवृष भनाराचसंहनन ही निमित्त होता है, अन्य संहनन नहीं होते, किन्तु ऐसा नहीं है कि वज्रवृषभ-नाराचसंहनन निमित्तरूप है, इसलिए केवलज्ञान हुआ और ऐसा भी नहीं है कि केवलज्ञान के कारण परमाणुओं को वज्रवृषभ-नाराचसंहननरूप होना पड़ा। जहाँ जीव की पर्याय में केवलज्ञान के पुरुषार्थ की जागृति होती है, वहाँ शरीर के परमाणुओं में

वज्रवृषभ–नाराचसंहननरूप अवस्था उनकी ही योग्यता से होती है; दोनों की योग्यताएँ स्वतन्त्र हैं, किसी के कारण कोई नहीं है।

जब जीव के केवलज्ञान प्राप्त करने की योग्यता होती है, तब शरीर के परमाणुओं में वज्रवृषभनाराचसंहननरूप अवस्था की ही योग्यता होती है – ऐसा सुमेल स्वभाव से ही है, कोई एक दूसरे के कारण नहीं है।

पेट्रोल और मोटर – दोनों की स्वतन्त्रता

कोई मोटर चली जा रही हो और उसकी पेट्रोल की टंकी के फूट जाने से उसमें से पेट्रोल निकल जाए और चलती हुई मोटर रुक जाए, तो वहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि पेट्रोल निकल गया है, इसलिए मोटर रुक गयी है। जिस समय मोटर के परमाणुओं में गतिरूप अवस्था की योग्यता होती है, उस समय वह गति करती है। मोटर का प्रत्येक परमाणु अपनी स्वतन्त्र क्रियावतीशक्ति की योग्यता से गमन करता है; इसलिए यह बात ठीक नहीं है कि पेट्रोल निकल गया, इसलिए मोटर की गति रुक गयी। जिस क्षेत्र में जिस समय उसके रुकने की योग्यता थी, उसी क्षेत्र में और उसी समय मोटर रुकी है।

जीव, वाणी का कर्ता नहीं

जीव को बोलने का विकल्प–राग हुआ, इसलिए वाणी बोली गयी–ऐसा नहीं है और वाणी बोली जानेवाली थी, इसलिए विकल्प हुआ–ऐसा भी नहीं है। यदि जीव के राग के कारण वाणी बोली जाती हो तो राग कर्ता और वाणी उसका कर्म कहलायेगा और यदि ऐसा हो कि वाणी बोली जानेवाली थी, इसलिए राग हुआ तो वाणी के परमाणु कर्ता और राग उसका कर्म कहलायेगा, परन्तु राग तो जीव की पर्याय है और वाणी, परमाणु की पर्याय है, उनमें कर्ता–कर्म भाव कैसे होगा? यदि जीव की पर्याय की योग्यता हो तो राग होता है और वाणी उन परमाणुओं का उस समय का सहज परिणाम है। जब परमाणु स्वतन्त्रतया वाणीरूप परिणमित होते हैं, तब जीव के राग हो तो उसे निमित्त कहा जाता है। केवली भगवान के वाणी होती है, तथापि राग नहीं होता। (इसलिए राग, वाणी का नियमरूप निमित्त भी नहीं है।)

शरीर का गमन और जीव की इच्छा–
दोनों की स्वतन्त्रता

जीव, इच्छा करता है, इसलिए शरीर चलता है यह बात नहीं है और शरीर चलता है, इसलिए जीव को इच्छा होती है – ऐसा भी नहीं है। जब शरीर के परमाणुओं में क्रियावतीशक्ति की योग्यता से गति होती है, तब किसी जीव के अपनी अवस्था की योग्यता से इच्छा होती है और किसी के नहीं भी होती है। केवली के शरीर की गति होने पर भी इच्छा नहीं होती। अत: दोनों स्वतन्त्र हैं।

विकल्प और ध्यान दोनों की स्वतन्त्रता

चैतन्य के ध्यान का विकल्प उठता है, वह राग है। उस विकल्परूपी निमित्त के कारण ध्यान जमता हो – ऐसी बात नहीं है, किन्तु जहाँ ध्यान जमता हो, वहाँ पहले विकल्प होता है। विकल्प के कारण ध्यान नहीं होता और ध्यान के कारण विकल्प नहीं होता। जिस पर्याय में विकल्प था, वह उस पर्याय की स्वतन्त्र योग्यता से था और जिस पर्याय में ध्यान जमा है, वह उस पर्याय की स्वतन्त्र योग्यता से जमा है।

(क्रमशः)

साभार : स्वाधीनता का शंखनाद, पृष्ठ 162–166
प्रवचनकार : पूज्यश्री कानजी स्वामी
संपादक : पं. देवेन्द्र कुमार जैन, बिजौलिया

अहो... भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनंद का पिण्ड है

देखो, सम्यग्दर्शन-ज्ञान चारित्र को यहां, 'साधु-साधक' त्रय कहा है, पाठ में 'तिण्हं साहूण' ऐसा कहा है न? अर्थात् कि ये रत्नत्रय 'साधु-साधक' त्रय है। अपना जो त्रिकाली एक ज्ञायक भाव है उसके श्रद्धान-ज्ञान और चारित्र ये तीन साधक है। जो, यहां तो यह साधन कहे है। एक ज्ञायक भाव मय नित्यानंदस्वरुप प्रभु आत्मा को ध्येय में लेने पर समकिती को जो ज्ञान-दर्शन-चारित्र की साधक दशा है, वह पूर्णानंद स्वरुप मोक्ष का साधन है- ऐसा कहते है। इसमें तो निमित्त साधन और व्यवहार साधन है यह बात ही उड़ा दी है।

अहा! वस्तु है ये तो त्रिकाल एक ज्ञायक भावरूप है और उसका अनुभव सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय है। यहां कहते है-ज्ञानी एकज्ञायक भावपने के कारण सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र को अपने से-आत्मा से अभेदपने-एकपने अनुभवता है। ऐसी बात! किसी दिन सुनी न हो इसलिये लगता है कि क्या ऐसा जैन धर्म! अर्थात् कि दया पालना, तपस्या करना, भक्ति पूजा करना इत्यादि तो जैनधर्म है पर यह कैसा धर्म! अरे भाई! दया आदि तो सब राग की क्रियायें है, वह कोई जैन धर्म नहीं। जैन धर्म तो एक ज्ञायकभाव का ज्ञान-श्रद्धान-आचरण को अपने से एकपने अनुभवना वह है, इसका नाम मोक्षमार्ग और इसका नाम धर्म है।

पर इससे कोई सरल मार्ग है कि नहीं?

अरे भाई! अपने सहजात्मस्वरुप में हो सके ऐसा यह सहज और सरल मार्ग है। अनंतकाल में तूने किया नही इसलिये कठिन लगता है, परंतु मार्ग तो यही है। देखो न! कहते है धर्मीजीव, एक ज्ञायक भावपने के कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की जो परिणति स्वाश्रय से प्रगट हुई उसे एकपने अभेदबुद्धि से अनुभवता है। -(7-523)

अहा! भगवान आत्मा सच्चिदानंद प्रभु अतीन्द्रिय आनंद कंद अकेला आनंद का दल है। स्वयं इस पर लक्ष करे तो मोक्ष का परिणाम हो, तो भी ये त्रिकाली द्रव्य मोक्ष का परिणाम नही कराता। निश्चय से मोक्ष के परिणाम का दाता (त्रिकाली ध्रुव) द्रव्य नही। अहा हा....! शुद्धरत्नत्रय रूप जो मोक्ष का मार्ग, उस मोक्षमार्ग की पर्याय का लक्ष (त्रिकाली) तथा द्रव्य उपर है, परन्तु द्रव्य ये पर्याय का दाता नही। मोक्षमार्ग तथा मोक्ष की पर्याय का कर्ता द्रव्य नहीं। तो कौन है ? ये पर्याय स्वयं ही अपनी कर्ता है।

प्रश्नः पर्याय आती तो द्रव्य में से है न?

उत्तरः द्रव्य में से आती है ऐसा कहना ये व्यवहार है, वाकी पर्याय होती है वह स्वयं स्वंय के कारण से (अपने षट्कारक से) होती है। जो द्रव्य से हो तो एक जैसी पर्याय होना चाहिये, परंतु ऐसा तो नही होता इसलिये वास्तव में पर्याय स्वयं पर्याय से होती है। पर्याय में थोड़ी शुद्धि, अधिक शुद्धि, इससे अधिक शुद्धि ऐसी तारतम्यता आती है वह पर्याय के स्वयं के कारण से आती है। हां, इतना है कि ये (शुद्ध) पर्याय का आश्रय स्वद्रव्य है।

प्रवचन रत्नकार भाग-8, पृष्ठ-130

बापु! वीतराग का मारग-मोक्ष का मारग तो अकेला वीतराग स्वरुप है, वह स्व आश्रित है, उसमें पराश्रित राग का एक अंश भी नहीं समा सकता। क्या कहा? जैसे आंख में रजकण नही समाता ऐसे भगवान के मार्ग में राग का कण भी नहीं समाता। अहो! मारग तो

शुद्ध चैतन्यस्वरुपमय एक वीतराग ही है। जैसे भगवान आत्मा एक चैतन्य स्वभाव का वीतराग-स्वभाव का अतीन्द्रिय आनंद और शांति का पिण्ड है, वैसे उसके आश्रय से प्रगट हुआ मार्ग भी वैसा अतीन्द्रिय आनंदमय और वीतरागी शांतिरूप है। भाई! सरागता ये कहीं वीतराग का मार्ग नहीं। -(8-208)

देखो, आत्माश्रित निश्चयनय अर्थात् स्वस्वभाव जो एक ज्ञायक भाव उसका आश्रय करने वाले ही मोक्ष प्राप्त करते है, परंतु पराश्रित व्यवहार का आश्रय करने वालो को कभी मोक्ष नही होता।

आहा हा....! चिदानंद घन पूर्णानंद का नाथ प्रभु आत्मा है, इसका आश्रय करने वाले मुनिवर मुक्ति को पाते है, परंतु व्यवहार का आश्रय करने वाले धर्म को नही पाते। ऐसा मार्ग प्रभु! मुक्ति का पंथ महा अलौकिक है, जिसमें एक स्व का ही आश्रय स्वीकृत है।

अहा हा....! सहजानंदस्वरुप आत्मा है न प्रभु! तू स्वरुप को जाने बिना बे-खबर होकर कहां सो रहे हो प्रभु! अरे! देख तो जरा ...! यह स्व-परकी एकता बुद्धि रूपी चोर घूम रहा है। जाग रे जाग नाथ!! स्वरुप मेंजाग्रत हो। ये जगत के लोग स्त्री पुत्रादि वगैरह तुझे लूट रहे है। भाई! उनमें घिरकर तू लुट रहा है, तो अब जाग और अपने को संभाल। स्व में जागने वाला कोई विरला ही बचता है। -(8-227)

निश्चय का आश्रय करने वाले कोई मुनिराज ही मुक्ति को पाते है, पर व्यवहार में फंसे हुए-मुग्ध हुए मुक्ति नहीं पाते।

आत्माश्रित निश्चय का आश्रय करने वाले ही मुक्त होते है, और पराश्रित व्यवहारनय का आश्रय तो एकांत मुक्ति नहीं प्राप्त करने वाला अभव्यजीव भी करता है। अभव्य भी भगवान जिनेश्वर के कहे हुए व्रत, शील, तप, समिति, गुप्ति इत्यादि अंनत वार निरतिचार पालता है पर इसकी कभी-मुक्ति नही होती। जो व्यवहार के आश्रय से-आचरण से धर्म का लाभ हो तो अभव्य का भी मोक्ष होना चाहिये, परंतु ऐसा नहीं है, इसलिये हे भाई! पराश्रय की बुद्धि छोड़कर एक स्व-स्वरूप का आश्रय कर, एक स्व के आश्रय से ही मुक्ति होती है। मुक्ति के मार्ग को पर की-निमित्त या व्यवहार की कोई अपेक्षा नहीं। अहो! मुक्ति का मार्ग परम निरपेक्ष है। व्यवहार होता जरूर है पर इसकी मुक्ति के मार्ग में कोई अपेक्षा नही-ऐसी बात है। -(8-228)

(क्रमशः)

साभार-अध्यात्म वैभव, भाग-1
(प्रवचन रत्नाकर गुजराती)
अनुवाद-संकलन-संपादन :
पं. राजकुमार जैन शास्त्री
अनुभव सदन, गुना (म.प्र.)

57 वाँ वीतराग विज्ञान
आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

अहमदाबाद। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं चैतन्यधाम अहमदाबाद द्वारा आयोजित 57 वाँ वीतराग विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर दिनांक 18 मई से 04 जून 2025 तक अनेकानेक कार्यक्रमों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

प्रतिदिन श्री जिनेन्द्र भगवंतों के प्रक्षाल, सामुहिक पूजन, पंचपरमागम, श्री पंचपरमेष्ठी, श्री शांतिविधान श्रुत पंचमी आदि विविध विधान भक्ति भावपूर्वक हुए तथा प्रतिदिन आध्यात्कि सत्पुरुष गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के प्रवचन एवं मुख्य बिन्दु प्रस्तुति करण किया गया।

इसी के साथ साथ सम्पूर्ण देशभर से पधारे शताधिक विद्वानों द्वारा स्वाध्याय, प्रौढ़ कक्षा, प्रशिक्षण कक्षाएँ, तथा पंचपरमागम ग्रन्थों पर विशेष सेमिनार संवाद आदि कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुए।

सर्वप्रथम दिन शिविर उद्घाटन, ध्वजारोहण, चित्र अनावरण, मंगलकलश विराजमान आदि से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। विशेष कार्यक्रम में दिनांक 24 मई 2025 को **स्नातक प्रतिभा सम्मान** समारोह एवं दिनांक 25 मई 2025 को **संकल्प दिवस** एवं डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल का पूजन साहित्य एक परिचर्चा तथा डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल की अधूरी उल्टी आत्मकथा पर विमर्श एवं उद्घाटन श्री संजय जी-रेखाजी तीर्थेश प्रियंका कु. मोक्षा समस्त दीवान परिवार सूरत द्वारा किया गया।

तथा दिनांक 31 मई 2025 को श्री श्रुत पंचमी महोत्सव दि. 3 जून 2025 को प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दिनांक 4 जून 2025 को दीक्षान्त एवं समापन समारोह का कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विद्वत्वर्ग में विशेष रूप से पधारे ब्र. अभिनन्दन कुमारजी शास्त्री, ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, पं. शैलेषभाईजी शाह, पं. परमात्म प्रकाशजी भारिल्ल, पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पं. कमलचन्दजी, पं. विपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. मनीषजी मेरठ, पं. रजनीभाई जी दोशी, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पं. देवेन्द्रजी बिजौलिया, पं. विपिनजी शास्त्री नागपुर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री इन्दौर, पं. पीयूषजी शास्त्री, पं. राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पं. अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पं. सोनूजी शास्त्री इसरो, पं. ज्ञायक शास्त्री मोरबी, डॉ. संजयजी दौसा, पं. सचिन जी शास्त्री चैतन्यधाम, पं. जिनकुमार जी शास्त्री, पं. चिर्चित शास्त्री, पं. दीपक शास्त्री बांसवाड़ा, पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री, पं. संजय सेठी, पं. मनीषजी इन्दौर, डॉ. महावीर प्रसाद शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री दिल्ली आदि शताधिक विद्वानों का समागम एवं धर्म लाभ मिला।

शिविर के मुख्य आमंत्रण कर्ता श्रीमती निपुणाबेन सुरेश कुमार जी परिवार वस्त्रापुर अहमदाबाद थे तथा विशेष आमंत्रण कर्त्ता श्रीमती विमलाबेन जयंतीलाल अहमदाबाद, श्रीमती कुसुमबेन प्रकाशभाई गंभीरमलजी अहमदाबाद, श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री अशोकभाई केशवलाल वापी, श्री अजित प्रसादजी वैभव जैन

दिव्य देशना ट्रस्ट, दिल्ली, श्रीमती कुसुम प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ़ तथा आगन्तुक विशिष्ट अतिथिगणों में सर्व श्री हितेन भाई सेठ मुम्बई, श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, डॉ. श्याम एम. सिंघवी उदयपुर, श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद, श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर, श्री महीपालजी धनपालजी 'ज्ञायक' बासवाड़ा, श्री सुशील कुमारजी सेठी दिल्ली, श्री पदमकुमारजी पहाड़िया इन्दौर, श्री विशुभाईजी सूरत, श्री अरविन्दभाई दोशी गोंडल, श्री विपुलभाई मोटाणी मुंबई आदि अनेकानेक अतिथिगणों की विशेष उपस्थिति रही तथा सहस्त्राधिक साधर्मीजनों ने धर्म लाभ लिया।

सुशील कुमार गोदीका	परमात्मप्रकाश भारिल्ल	अनिल भाई गांधी	राजूभाई शाह	प्रतीक भाई शाह
अध्यक्ष	महामंत्री	अध्यक्ष	मंत्री	मंत्री
पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर		चैतन्यधाम, अहमदाबाद		

विदिशा श्री शीतलनाथ दिग. जैन बड़ा मंदिर ट्रस्ट अन्दर किला विदिशा में दिनांक 10 से 16 मई 2025 तक प्रथम **आध्यात्मिक जैनत्व बाल युवा शिक्षण शिविर** सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल, विभिन्न कक्षाएँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस अवसर पर मुम्बई से विशेष रूप से पधारे पं. निखिल भैयाजी के दोनों समय स्वाध्याय एवं समस्त स्थानीय विद्वानों का सानिध्य एवं लाभ प्राप्त हुआ।

श्रुत पंचमी पर्व के पावन अवसर पर श्री शीतलनाथ दिग. जैन बड़ा मंदिर ट्रस्ट अन्दर किला विदिशा में ही दिनांक 29 से 31 मई 2025 तक **श्री लघु चौबीस तीर्थंकर विधान, श्री याग मण्डल विधान** एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दीवानगंज से विशेष रूप से पधारे पं. शुभमजी शास्त्री, पं. सुलभ जी शास्त्री एवं स्थानीय विद्वानों का समागम सभी को प्राप्त हुआ। प्रतिदिन श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल सामुहिक पूजन, विधान दोनों समय स्वाध्याय, अन्तिम दिन वेदी शुद्धि पूर्वक श्री जिनबिम्ब विराजमान एवं जिनवाणी विराजमान की गई। **-मलूकचंद जैन**

सस्कृति साहित्य में -

श्रीमती विपाशा जैन की पी. एच. डी. पूर्ण

जयपुर। केन्द्रिय संस्कृत विश्व विद्यालय जयपुर परिसर में साहित्य विद्या शाखा में सहायकाचार्या के रूप में कार्यरत **श्रीमती विपाशा जैन** साहित्याचार्य ने केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर की साहित्य विद्या संकाय में प्रो. रामकुमार शर्मा के निर्देशन में **'ध्वन्यालोकलोचन स्थश्लोकानां सव्याख्यानं शास्त्रीय समीक्षणम्'** विषय पर शोध कार्य प्रस्तुत कर पी.एच.डी पूर्ण की है आपने अपने शोधकार्य के दौरान जे आर एफ प्राप्त कर अपनी प्रतिमा का परिचय दिया है इस विशेष उपलब्धि हेतु **'ज्ञानधारा'** परिवार द्वारा हार्दिक बधाई एवं अगामी उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ। **-प्रबंधक**

श्री अनंतभाई ए. सेठ की चिर विदाई.......

सामान्यत: हमें किसी से कुछ काम पड़े तो उनसे मिलते हैं श्री अनंतभाईजी के सम्बन्ध में भी कुछ इस प्रकार से ही हुआ–

दादर के रजनी भाई छोटालाल ने हमें देवलाली में चर्चा करते हुए जैनसंघ के सुविख्ययात धनी श्री अनंतभाई ए. सेठ को मिलने का सुझाव दिया।

दूसरे दिन मैं श्री अनंतभाई सेठ के देवलाली निवास स्थान पर पहुँचा। यह मेरी उनसे प्रथम भेंट थी। उन्होंने जैन समाज के विकास के जो कुछ कार्य चल रहे हैं उसकी जानकारी मुझसे चाही। मैंने अनेक प्रोजेक्ट के बारे में उनसे चर्चा की। चर्चा के दौरान दक्षिण भारत में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी की साधना भूमि पौन्नूरमलै की चर्चा सुनकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए। उनके सुझाव पर अगले माह ही हम पौन्नूर पहुंचे। तीर्थ की पहाड़ी के नीचे एक आश्रम है. हम लोग उस आश्रम के पास एक पुरानी झोपड़ी थी वहाँ ठहरे। झोपड़ी की हालत अत्यन्त जरजरित थी एवं चूहों की भागदौड एवं उनके द्वारा कुतुरे हुए कपड़े इत्यादी स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

दूसरे दिन एक ऑर्किटेक्ट को बुलवाया। उनसे चर्चा उपरान्त हमने उस स्थान पर एक कार्यालय एवं विश्राम कक्ष बनवाये जाने का प्रस्ताव उनके समक्ष रखा। श्री अनंतभाई सेठ ने उस प्लॉट पर आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का जीवन दर्शन बताते हुए एक विशाल सुन्दर हॉल बनवाने का निर्णय करवाया। वे इस प्लॉट पर एक सुंदर संकुल बनाने का निर्णय ले रहे थे। उन्होंने बताया कि इस संकुल के निर्माण का खर्च हमारी ओर से भेजा जायेगा। हमारे ट्रस्टीमंडल ने उनकी उदारता के लिये आभार व्यक्त किया।

श्री अनंतभाई सेठ ने ऑर्किटेक्ट से चर्चा करते हुए प्रस्तावित विकास को विशाल रूप देते रहे। पौन्नूर की स्थानीय कमेटी से हमारा संपर्क पूर्व से ही था। हम इस संभाग में प्राचीन मंदिरों के जिर्णोद्धार का कार्य पूर्व से ही करते आए हैं। लगभग दो वर्ष की अवधि में पौन्नूर का संकुल तैयार हो गया।

तीर्थक्षेत्र पौन्नूरमलै में एक शिविर का छोटा कार्यक्रम आयोजित किया गया इस कार्यक्रम में श्री अनंतभाई के भानजे श्री निमेषभाई शाह पधारे थे। श्री निमेष भाई ने देखा कि इसी प्लॉट में एक जिनमंदिर का निर्माण कार्य अधूरा पड़ा है। मंदिर क्षेत्र का निरीक्षण करने के उपरान्त श्री निमेष भाई ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि इस जिन मंदिर को अति भव्य रूप से बनाया और सजाया जाए। उनकी यह घोषणा तो हमारे लिए अनपेक्षित एवं आनंद प्रदान करने वाली थी। इस घोषणा की कार्यान्विति केवल दो वर्षों में जिन मंदिर तैयार होकर पूर्ण हुई। पौन्नूरमलै में एक ऐतिहासिक पंच कल्याण प्रतिष्ठा सम्पन्न होकर जिनबिम्ब बिराजमान हो गए। इस महा आयोजन में श्री अनंतभाई सेठ एवं श्री निमेषभाई शाह ने पूर्ण उदारता पूर्वक कार्य सम्भाला। आज पौन्नूरमलै दक्षिण भारत में पूज्य आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का मुख्य धर्म स्थान बना हुआ है।

श्री कुन्दकुन्द–कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा संस्थापित श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रतिवर्ष आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन करता

है इस शिविर के समय हमारा ट्रस्टी मंडल एवं श्री अनंतभाई सेठ उपस्थित थे। स्वाध्याय प्रेमी समाज के लिए कुछ परोपकारी कार्य अमल में लाना चाहिए ऐसा प्रस्ताव आया। इस पर साधर्मियों को शिक्षण एवं चिकित्सा के लिए सहायता पहुंचाने का निर्णय लिया गया। इस कार्य में श्री अनंतभाई सेठ ने कायमी योगदान देने की स्वीकृति दी। साथ साथ इस प्रकार के कार्य करने की प्रेरणा भी संस्था को मिली।

श्रीकुन्दकुन्द-कहान दिग. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई एवं श्री अनंतभाई का श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई दोनों मिलकर तत्त्व प्रचार की एवं शिविरों की श्रृंखला निरन्तर बनाये हुए हैं। पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रवचन ज्यादा से ज्यादा श्रोताओं तक पंहुचें इसीलिये **गुरुवाणी मंथन शिविरों** का आयोजन चल रहा है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि स्वाध्याय प्रेमी समाज में नए जिन मंदिर, स्वाध्याय भवन एवं अन्य धार्मिक गतिविधियों के चलाने में भी श्री अनंतभाई सेठ परिवार का महद् योगदान रहा है।

एक प्रसंग का उल्लेख करना चाहता हूँ कि आज से करीब 17 वर्ष पूर्व अहमदाबाद के वस्त्रापुर मंदिर की प्रतिष्ठा सम्पन्न हो रही थी, कुछ लोगों के बीच चर्चा का विषय आया कि वंसतभाई दोशी गत 20-25 वर्षों से शिखरजी में दिगम्बर जिन मंदिर एवं पर्वत की रक्षा के कानुनी विवादों का कार्य देख रहे हैं लेकिन शिखरजी में मुमुक्षु यात्रियों के लिए दर्शन, पूजन एवं स्वाध्याय के लिए कोई सुविधायुक्त स्थान उपलब्ध नहीं है, स्वाध्याय भवन भी उपलब्ध नहीं होता है-चर्चा में श्री अनंतभाई सेठ ने कहा कि शिखरजी में एक संकुल बनाना चाहिए, और उस विषय में कोई कार्यवाही करनी चाहिए। सभी का उत्साह देखते हुए मैंने शिखरजी में मेरे मित्र श्री महावीरप्रसादजी सेठी से फोन पर संपर्क किया और एक प्लॉट खरीदने के सम्बन्ध में श्री सेठी जी से पूछा गया। आनंद की बात तो यह रही कि श्री सेठी जी ने बताया कि हमारी जैन कोठियों के पीछे करीब 3-4 एकड़ का प्लॉट हमें मिल सकता है। फिर तो पूछना ही क्या, उक्त प्लॉट अच्छी राशि देकर खरीद लिया गया। इस समाचार से सर्वत्र आनंद की लहर फैल गई। इस प्लॉट के खरीदने में जो उदारता एवं उत्साह श्री अनंतभाई जी ने दिखाया वह चिरस्मरणीय रहेगा। सभी को ज्ञातव्य ही है कि श्री सम्मेद शिखरजी में श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में अद्वितीय रचना हुई है।

श्री अनंतभाई सेठ को तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई का अध्यक्ष पद स्वीकारने के लिए निवेदन किया गया जिस पद को उन्होंने सहज स्वीकार कर वे जिन शासन के सभी कार्यों में बिना भेदभाव किए देश भर में जिनवाणी के संदेश आजीवन फैलाते रहे।

श्री अनंतभाई के देह विलय से समाज को अपूर्णनीय क्षति हुई है। इस प्रसंग पर उनके योगदान को स्मृति में रखते हुए आगे परमार्थ के कार्य संभालने की भावना बनती है। उनके निधन से मुझे एक बड़े भ्राता एवं हितचिंतक मार्गदर्शक की क्षति पहुंची है। मेरे लिए तो वे गार्जियन, गाईड एवं संरक्षक थे। मैं उन्हें भावपूर्वक विनियांजलि समर्पित करता हूँ। और भावना भाता हूँ कि वह अपनी आत्मा साधना शीघ्र पूर्ण कर परमात्मपद को प्राप्त करे....।

-**वसंतलाल एम. दोशी,** अध्यक्ष श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थ सुरक्ष ट्रस्ट, मुम्बई

ग्यारहवाँ वार्षिकोत्सव सानंद सम्पन्न

मुम्बई। श्री सीमंधर स्वामी दिग. जिनमंदिर विलेपार्ला मुम्बई का 11 वाँ वार्षिकोत्सव दि. 27 से 31 मई 2025 तक सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: श्री जिनेन्द्र भगवंतों के प्रक्षाल, सामुहिक पूजन तथा प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के आध्यात्मिक सी.डी. प्रवचन का सभी ने लाभ लिया तथा सोनगढ़ से विशेष रूप से पधारे बाल ब्र. श्री हेमंतभाईजी गाँधी द्वारा दोनों समय स्वाध्याय का सभी को लाभ मिला। अन्तिम दिन दिनांक 31 मई 2025 को अभिषेक पूजनादि के पश्चात् उपस्थित सभी साधर्मीजनों द्वारा जिनमंदिर के शिखर पर स्थित ध्वज की शुद्धि पूर्वक ध्वजारोहण किया गया पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं ब्र. हेमंतभाई जी का स्वाध्याय हुआ।

तत्पश्चात् पार्ला पंचकल्याणक महोत्सव का स्मरण करते हुए महिला मण्डल पार्ला द्वारा अत्यन्त रोचक सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में सभी साधर्मीजनों ने उत्साह पूर्वक सम्मिलित होकर धर्म लाभ लिया। –हितेन ए. सेठ

---

15 वाँ श्रुत महोत्सव सम्पन्न

द्रोणागिरी। श्री गुरुदत्त मुनिराज एवं साढ़े आठ करोड़ मुनिराजों की निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं जैनिजम थिंकर संस्थान दिल्ली द्वारा आयोजित एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्त्वावधान में तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में **श्री षट् खण्डागम सत्प्ररूपणा विधान** एवं **आगम आध्यात्मिक शिक्षण** शिविर दिनांक 25 मई से 2 जून 2025 तक 15 वाँ श्रुत अवतरण महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ। तथा प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन का सभी ने लाभ लिया।

इस अवसर पर प्रतिदिन श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल, पूजन एवं षट्खण्डागम सत्प्ररूपणा विधान स्वाध्याय, एवं पंच परमागम, षट्खण्डागम, तत्त्वार्थसूत्र आदि ग्रन्थों पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

विशेष रूप पधारे पं. जे. पी. दोशी मुम्बई, पं. राजकुमारजी उदयपुर, पं. विकाशजी इन्दौर, डॉ. सचिन्द्र जी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. विकाशजी शास्त्री वानपुर, पं. दीपकजी 'धबल' भोपाल, पं. देवेन्द्रजी ग्वालियर, पं. सुमित शास्त्री, पं. अनिल जी शास्त्री जयपुर, पं. अजितजी शास्त्री अलवर, डॉ. सुरभि जैन खण्ड़वा, डॉ. ममता जी उदयपुर एवं स्थानीय ब्रह्मचारी बहिनों एवं विद्वानों का लाभ सभी को प्राप्त हुआ। अन्तिम दिन सिद्धक्षेत्र पर पर्वतराज की सामुहिक वंदना का 250 से अधिक साधर्मीजनों ने लाभ लिया।

सुरेन्द्र जैन मिन्टू, अध्यक्ष — नीरज जैन, महामंत्री

मंगल आमंत्रण

मंगल आमंत्रण

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में

श्रीमती नयनाबेन हर्षदभाई शाह डेलीवाला परिवार देवलाली एवं
श्रीमती ममता-आई.एस. जैन परिवार, मुम्बई

के प्रमुख आयोजकत्व में आषाढ़ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर

श्री प्रवचनसार परमागम विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यान माला

दि. 3 जुलाई से 11 जुलाई 2025
(वीर शासन जयंती पर्व तक)

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रेरणामूर्ति परमपूज्य कहान गुरुदेव श्री की भवताप नाशक अलौकिक सी.डी. प्रवचनों का विशेष लाभ प्राप्त होगा

आगन्तुक विद्वत् सानिध्य :

पं. राजेन्द्र कुमारजी जबलपुर, पं. राजकुमार जी शास्त्री गुना
डॉ. विनोद 'चिन्मय' शास्त्री विदिशा, डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री विदिशा,
पं. सुनील 'धवल' भोपाल, पं. उर्विशजी शास्त्री देवलाली, पं. समकितजी शास्त्री देवलाली

दैनिक कार्यक्रम :

प्रातः 06:30 से 07:00 श्री जिनेन्द्र प्रक्षाल
07:00 से 09:30 श्री प्रवचनसार पूजन विधान
09:30 से 10:15 विश्राम
10:15 से 11:15 पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी प्रवचन
11:15 से 12:00 प्रवचन
दोप.: 03:00 से 03:45 प्रवचन
03:45 से 04:30 प्रवचन
04:30 से 05:00 श्री जिनेन्द्र भक्ति
07:30 से 08:15 प्रवचन
08:15 से 09:00 प्रवचन
09:00 से 09:30 सांस्कृतिक कार्यक्रम

विशेष कार्यक्रम :

रविवार, दि. 3 जुलाई 2025
प्रातः 07:00 बजे मंगल कलश शोभायात्रा
प्रातः 07:30 बजे झण्डारोहण
प्रातः 08:00 श्री जी विराजमान कलश स्थापन
सोमवार, दि. 11 जुलाई 2025
श्री वीर शासन जयंती पूजन
श्री महावीर भगवान की प्रथम
दिव्य ध्वनि दिवस पर विशेष पूजन,
भक्ति, प्रवचन कार्यक्रम

पूज्यश्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली (नाशिक) महाराष्ट्र
सम्पर्क सूत्र : 90796 12682, 95298 05731

अहो... सच्ची लगन लगी हो तो कार्य हुए बिना रहता ही नहीं...।

***प्रश्न**–क्या स्थूल उपयोग को सूक्ष्म बनाने की कोई पद्धति नहीं होती ?*

समाधान–उपयोग स्थूल होने का कारण अपने को बाहर की महिमा है; बाहर की एकत्वबुद्धि है; इसलिये उपयोग स्थूल हो गया है।

बाह्य में उसे कहीं अच्छा न लगे, कहीं न रुचे, कहीं चैन न पड़े, कहीं सुख न लगे तथा इस ओर सुख मेरे आत्मा में है; मुझे आत्मा कैसे पहिचानने में आयें ? कैसे पहिचान हो ?–इस भाँति हर क्षण चैतन्य की लगन लगे, उसकी महिमा आये तो उपयोग सूक्ष्म हुए बिना नहीं रहता। यथार्थ रुचि हो, सच्चा पुरुषार्थ करे, सच्चा कारण प्रगट हो तो कार्य हुए बिना नहीं रहता। जैसे अकौआ का (आक) बीज बोये और आम का वृक्ष उगे, ऐसा नहीं बनता; आम का बीज बोये तभी आम का वृक्ष उगता है; उसी प्रकार आत्मा को यथार्थ पहिचाने, चैतन्य का मूल पहिचाने और पश्चात् उसमें ज्ञान–वैराग्य–ध्यान का सिंचन करे तो वह प्रगट होता है। उसका मूल स्वभाव पहिचानना चाहिये। यह स्वभाव है और यह विभाव है इसप्रकार विभाव–स्वभावका भेद करके स्वभावको पहिचानना चाहिये।

सच्ची लगन लगी हो तो कार्य हुए बिना रहता ही नहीं; इसलिये स्वभाव को पहिचानने का ही प्रयास करना, थकना नहीं। उसका प्रयास करने से कार्य होता है और वही स्वभाव को यथार्थरूप से ग्रहण करने की रीति है। **साभार : स्वानुभूति दर्शन :192**

भगवान महावीर व जैनाचार्यों के सिद्धान्तों व पूज्य गुरूदेवश्री के तत्त्व को वीतराग-वाणी के माध्यम से देश-विदेश में प्रचार-प्रसार करने वाली संस्था एवं अनेकानेक आधुनिक तकनीकों से जैनधर्म के प्रचार में रत....

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

(श्री शांतिलाल रतिलाल शाह परिवार, मुम्बई द्वारा संचालित)

vitragvani vitragvani vitragvani

www.vitragvani.com, www.vitragelibrary.org, www.gurukahanartmsueum.org
www.kahanshishuvihar.org, www.jeev.net.in

Vitragvani

302, कृष्ण कुंज, वी.एल. मेहता मार्ग विलेपार्ले वेस्ट, मुम्बई-400 056, +91 75068 27160

हार्दिक आमंत्रण

मङ्गल आमंत्रण

श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर के तत्त्वावधान में

सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी की तलहटी में स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में

प्रस्तावित धार्मिक कार्यक्रम-2025-26

दिनांक :	प्रोग्राम का नाम :	मङ्गल सानिध्य :	प्रमुख आयोजक :
3-10 जुलाई 25	**श्री सिद्धचक्र विधान एवं व्याख्यान माला**	पं. निखिलजी, मुम्बई ब्र. रवि भैयाजी पं. संजयजी पुजारी खनियांधाना	श्रीमति पद्मादेवी ध.प. पदमचंदजी, श्रीमति शिखा, ऋषि जैन, सम्यक जैन परिवार, मुंगावली
28-अगस्त से 6 सितम्बर 2025	**श्री दशलक्षण विधान श्री रत्नत्रय विधान एवं व्याख्यान माला**	पं. प्रतीकजी शास्त्री जबलपुर डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर	श्री दिनेशजी जैन परिवार कानपुर एवं समस्त साधर्मीजन
26-28 सितम्बर 25	**तृतीय युवा ज्ञान शिविर**	पं. विपिनजी शास्त्री, नागपुर पं. अनुभवजी, करेली विदुषी श्रीमती स्वानुभूतिजी शास्त्री, मुम्बई	श्री केशरीचंद पूनमचंद सेठी चैरिटेवल ट्रस्ट, दिल्ली
19-21 अक्टूबर 25	**दीपावली निर्वाणोत्सव श्री महावीर पंचकल्याण विधान**	श्री महावीर विधान एवं व्याख्यान माला	-------- -------- --------
29अक्टूबर 5 नवम्बर 25	**कार्तिक अष्टान्हिका महापर्व**	डॉ.दीपक जी शास्त्री,जयपुर विदुषी जिनल बेन,देवलाली	--------
16-18 फरवरी 2026	**डॉ. संजीवजी गोधा की तृतीय पुण्य स्मृति में 'डॉ. संजीव गोधा निलय 'उद्घाटन समारोह एवं शिविर**	ब्र.श्रेणिकजी, जबलपुर डॉ. मनीषजी मेरठ पं. आर्जवजी गोधा पं.अशोक जी उज्जैन	श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी श्री तिलकजी,अरिहंत चौधरी पं. आर्जव गोधा एवं समस्त चौधरी परिवार,किशनगढ़
24-3 मार्च 2026	**फाल्गुन अष्टान्हिका पर्व**	श्री मण्डल विधान एवं व्याख्यान माला	---------------- ----------------
मार्च 2026	पू. श्री कानजी स्वामी की 137 वीं जन्म जयंती एवं गुरुवाणी मंथन शिविर	पं. देवेन्द्र कुमार जी विजौलिया पं. सुनीलजी जैनापुरे राजकोट भाई श्री प्रदीपजी मानोरिया	श्री कुन्दकुन्द-कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुंबई

जितना पुण्योदय होगा उतनी सामग्री मिलेगी

प्रकृति की कितनी सुन्दर व्यवस्था है कि जिसके पास जो भी छोटा-बड़ा बर्तन हो, उतना जल उसको प्राप्त होगा। नल का जल हो या नदी का जल उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता है।

यदि आपके पास एक लोटा है तो आप चाहे नल से, कुए से, नदी से या समुद्र से पानी भरने जाओ, किन्तु आपको पानी उतना ही प्राप्त होगा, जितना बड़ा आपका पात्र है, उससे कम-अधिक प्राप्त नहीं होगा।

उसीप्रकार पूर्व पर्याय में हमारे विशुद्ध परिणाम से जो पुण्य कर्म का बंध हुआ, उसके फल में उतनी ही सामग्री हमें वर्तमान में प्राप्त होगी। हम चाहे छोटे से गाँव में रहें, शहर में रहें या विदेश में चले जायें; हमारा जितना पुण्य होगा, उतनी सामग्री हमें मिलेगी, उससे कम-अधिक नहीं मिलेगी।

कहा भी है-

'पापोदय में चाह व्यर्थ है, नहीं चाहने पर भी हो।
पुण्योदय में चाह व्यर्थ है, सहजपने मनवांछित हो।।

सचमुच कर्म जड़, अचेतन होने के साथ पूर्ण रूप से ईमानदार भी हैं, उनमें कहीं कुछ बेईमानी की गुंजाईश नहीं है। लौकिक जड़ कम्प्यूटर भी भ्रष्ट हो सकता है, क्योंकि भ्रष्ट मनुष्य उसको चलाते है, किन्तु आठ कर्मरूपी आटोमैटिक कम्प्यूटर अदृश्य, अमूर्तिक, निष्पक्ष है।

अत: अच्छा फल पाने के लिए एक ही उपाय है कि अच्छे कर्म करें, अच्छे भाव करें, कर्म आटोमैटिक अच्छे बंधेगे और फिर उदय में भी आकर अच्छे फल देंगे।

जो भी संयोग पूर्व कर्मोदय से हमारे भाग्यानुसार मिला है, उसमें संतोष धारण करना चाहिए। यदि उसमें संतोष नहीं रखते तो तीन लोक की सम्पत्ति प्राप्त होने पर भी हमें संतोष की प्राप्ति नहीं होगी।

अत: उदयानुसार मिले संयोगों में हर्ष-विषाद न कर, ज्ञाता भाव से उनको जानकर, उनसे भिन्न अपने निज ज्ञायक स्वभाव की आराधना का सम्यक् पुरुषार्थ कर सुखी होना चाहिए।

-'जैनरत्न' वाणीभूषण पं. ज्ञानचन्द जैन, सोनागिर

ॐ शांति! शांति!! शांति!!!

साभार: ज्ञान का चमत्कार : 32

22 जुलाई 2017 ____ 2025 अष्टम् पुण्य तिथि .....

देहातीत बनों माताजी.... तुम्हें नमन है...

माँ आपकी स्मृतियाँ, आपकी छवि, कभी विस्मृत न हो पाऐंगी।
माँ आपके धार्मिक संस्कार, आपकी प्रसन्नमुद्रा, सदैव याद आऐंगी।।

विदिशा। श्रीमती कमलादेवीजी (धर्मपत्नि वाणीभूषण पं. ज्ञानचन्दजी) का 22 जुलाई 2017 को 80 वर्ष की उम्र में शांत परिणामों पूर्वक देह परिवर्तन हुआ था।

समय कितनी तेजी से निकलता है देखते ही देखते 22 जुलाई 2025 को आठ वर्ष पूर्ण हो गये। पूज्य माताजी ने अपने जीवन में अच्छा-बुरा, धूप-छाँव, दुःख-सुख सभी समय देखा और सभी परिस्थितियों में समता-ज्ञाता रहीं तथा ग्रहस्थ जीवन निभाने के साथ-साथ पूज्य बाबूजी के साथ सम्पूर्ण देश के संकुलों सिद्धक्षेत्रों/तीर्थक्षत्रों की यात्रा, दर्शन, पूजन, स्वाध्याय का लाभ लेते हुए अधिकतम बीस वर्ष तक सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी में रहकर प्रात: 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक आत्म साधना/धर्माराधना में रत रहते हुए अपना मनुष्य भव सार्थक किया...।

सभी साधर्मी जनों के प्रति आत्मीय स्नेह प्रदान करने वाली पू.माताजी सदैव स्तुति-पाठ, भजन-भक्ति, सामायिक पाठ, समाधि पाठ, स्वाध्याय, पूज्य गुरुदेव श्री के टेप प्रवचनों आदि का खूब लाभ लिया।वह प्रतिमाह 'ज्ञानधारा' का अंक आते ही पूरा पढती थी।

हम सदैव आपको आदर्श रखते हुए आपके द्वारा प्रदत्त धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों पूर्वक सन्मार्ग पर बढ़ते रहें.. इसी भावना के साथ अठवीं पुण्यतिथि पर विनम्र भावाञ्जलि...

माँ! जितनी तारीफ करें... उतनी कम है, माँ के चरणों में सदा सदा नमन् है......।

-संपादक

श्री दशलक्षण महापर्व के अवसर पर- **श्री दशलक्षण विधान एवं आध्यामिक शिविर**

सोनागिरजी। सिद्ध भगवंतो की धर्म नगरी सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी की पवित्र भूमि पर श्री कुन्दकुन्द-कहान नगर के मंगल प्रांगण में नवनिर्मित्त सुसज्जित श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर में पर्वाधिराज श्री दशलक्षण पर्व के पावन अवसर पर दिनांक 28 अगस्त से 06 सितम्बर 2025 तक **श्री दशलक्षण विधान** एवं दिनांक 07 सितम्बर 2025 को श्री परमागम मंदिरजी में श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान के समक्ष श्री रत्नत्रय पर्व की पुर्णता के अवसर पर **श्री रत्नत्रय विधान** सम्पन्न होगा। इस अवसर पर प्रतिदिन पूज्य गुरुदेवश्री के प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रवचन तथा आगन्तुक विद्वान डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, पं. प्रतीक भैयाजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. मुकेश 'तन्मय' शास्त्री विदिशा आदि विद्वानों एवं ब्रह्मचारी भाई बहिनों तथा स्थानीय विद्वानों के मंगल सानिध्य पूर्वक आध्यात्मिक शिविर के माध्यम से तत्त्वज्ञान का लाभ प्राप्त होगा।

आप सभी साधर्मी/आत्मार्थी भव्यजनों को हमारा भावभीना मंगल आमंत्रण है। कृपया अवश्यमेव पधारकर सिद्धक्षेत्र की वंदना, परिक्रमा, पूजन, भक्ति, टेप प्रवचन, तत्त्वगोष्ठी एवं स्वाध्याय का लाभ लेते हुए सिद्धक्षेत्र की पवित्र भूमि पर आत्माराधना/ तत्त्वप्रभावना पूर्वक अपने मनुष्य जीवन को सफल करें।

-पदमकुमार पहाड़िया 'महामंत्री'

प्रकाशन तिथि :1 जुलाई 2025, वर्ष 36, अंक 1 कवर सहित कुल पृष्ठ 28, मूल्य रु. 5/-

प्रकाशन तिथि : 1 जुलाई 2025, वर्ष 36, अंक 1
कवर सहित पृष्ठ 28, मूल्य रु. 5/-, विदिशा (म.प्र.)

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड R.N.I. No. 50334/90
डाक पंजीयन क्र.- without pre payment
म.प्र./विदिशा 02/2024 से 2026

सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी के श्री कुन्दकुन्द नगर में स्थित
श्री बाहुवली ध्यान मंदिर के निर्माता :

स्मृतिशेष श्री प्रकाशचन्दजी
श्री बृजमोहनलालजी पोद्दार
स्मृतिशेष श्रीमति वीनादेवी पोद्दार
परिवार हरिद्वार

द्वारा श्री परमागम मंदिर सोनागिरजी में मण्डल विधान के
अवसर पर मंगल कलश विराजमान करते हुए......

अतीत के झरोंखो से...

Adv.

प्रति,

प्राप्तकर्ता का पता

If Undelivered please return to :

'ज्ञानधारा' मासिक पत्रिका
पोस्ट बॉक्स नं. 16, मुख्य डाक घर
मेन रोड, विदिशा - 464001 (म.प्र.)

स्वामित्व आचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट, विदिशा, संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक मुकेश 'तन्मय' शास्त्री द्वारा
दृष्टि आफसेट एण्ड पैकिंग प्रा. लि., गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं 10 सिटी सेन्टर, हॉस्पिटल रोड, विदिशा (म.प्र.) से प्रकाशित।